सत्य धर्म प्रवेशिका

SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग ६)

''जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी,
मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही
'मैंपन' (एकत्व) करता है और
उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है।
यही सम्यग्दर्शन की विधि है।''

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

इच्छा संसार का मूल है और इच्छा का मूल मोह और मिथ्यात्व है।

Desire is the root cause of saṃsāra. Desire is the result of delusion and false belief.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपशब्द अपने भीतर के रोष को ही दर्शाते हैं।

Abusive language only demonstrates how much anger we carry within us.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

असफलता मे दुःखी नहीं होना, यह सही समझ का फल है।

Remaining calm and unperturbed in the face of adversity is the consequence of correct understanding.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर दिल में कटुता है, तो वह वाणी में सहज ही दिखती है।

If there is bitterness in the heart, it is reflected in our speech.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मुक्तिमार्ग उन्हें प्राप्त होता है जिन्हें पूरे विश्व में आत्मा से अधिक मूल्यवान और उत्कृष्ट अन्य कुछ लगता ही नहीं।

Only they attain the path of liberation for whom there is nothing more precious and important in the entire world than the soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे पर में सुखबुद्धि है, उसे मुक्तिमार्ग नहीं मिलता।

He who thinks that happiness lies outside the self,
cannot attain the path of liberation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारे वर्तमान के परिणाम ही हमारे भविष्य के सुख-दु:ख तय करते हैं।

Our current thoughts, emotional state and disposition determine our future joys and sorrows.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

परद्रव्य से मान का पोषण या दीनता ही हमारे अनन्त संसार का कारण है।

Feelings of arrogance or wretchedness due to external materials (and the possession thereof) are the cause of endless transmigration.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अज्ञानी ने अनादि से क्रोध-मान-माया-लोभ के पीछे ही अपना जीवन गँवाया है।

Since beginningless time, the ignorant have wasted their lives immersed in anger, arrogance, artifice and avarice.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे भगवान ही बनना है और कुछ भी नहीं, उसकी भवशृंखला का अन्त निकट है।

One who is focused on attaining apotheosis and nothing else is close to the end of his transmigration.

Apotheosis — humans achieving divine status, attaining godhood

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्र अनुसार स्वयं को अनुशासन में रखनेवाला साधक ही अपनी साधना का सच्चा फल प्राप्त कर सकता है।

Only the seeker who follows the discipline laid down by the scriptures can attain the true reward of his diligent practice.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्रों में साधना हेतु विनय को विशेष महत्व दिया गया है। इसलिये सभी साधकों को अहंकार छोड़कर स्वयं को विनयशील बनाना चाहिये।

The scriptures lay special emphasis on humbleness for the seeker. Hence, all seekers should give up their arrogance and try to be humble.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्रों के सम्यक् अभ्यास का फल तत्त्वार्थश्रद्धान है। तत्त्वार्थश्रद्धान उसे कहते हैं जब हमें आत्मा के अलावा कुछ भी पसन्द न हो।

The appropriate study of the scriptures results in tattvārthaśraddhāna (perfect understanding of and firm conviction in the eternal truth). One is said to have tattvārthaśraddhāna when one has no interest in anything other than the soul (truth).

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्र स्वाध्याय का एकमेव उद्देश्य तत्त्व का भावभासन होना चाहिये। न कि कोरी विद्वत्ता बनाने का और न ही विद्वत्ता से कमाई करने का।

The recognition of the eternal truth should be the only purpose of studying the scriptures. One should not study the scriptures merely to become a scholar or to make money out of it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिनके पास शास्त्रों से निर्णीत सम्यक् ज्ञान नहीं है, उनसे धर्म के नाम पर लोग कुछ भी करवा सकते हैं।

Those who lack adjudicated knowledge of the scriptures can be manipulated by anyone into doing anything in the name of religion.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का विनय ही हमें आत्मज्ञान की ओर ले जा सकता है।

Only deep veneration and reverence for the true God, scripture and preceptor can take us towards knowledge of the true self.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चे देव-शास्त्र-गुरु पहचानना अत्यन्त आवश्यक है। जो गुरु दूसरों के प्रति द्वेष या रोष कराते हों वे सत्य धर्म नहीं सिखा सकते।

It is crucially important to identify the true God, scripture and preceptor. He who encourages aversion or anger towards others cannot teach you the Satya (real) Dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बिना किसी गुरु पर भरोसा किये हम कुछ नहीं कर पाते। इसलिये जब हमें सच्चे गुरु की प्राप्ति होती है और उन पर भरोसा होता है तब आत्मलाभ हुए बिना नहीं रहता। यही सच्चे गुरु की पहचान है।

We cannot attain anything without faith in a preceptor. Hence, when we find the true preceptor and have faith in him, we are bound to attain something good for the true self. In fact, this is the indicator of a true preceptor.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो कम-से-कम एक अन्तर्मुहूर्त में एक बार अपनी आत्मा का अनुभव करते हों उन्हें शास्त्रों में छठवाँ-सातवाँ गुणस्थानकवर्ती बताया है।

The scriptures state that those who experience their soul at least once within 48 minutes are in the 6th or 7th guṇasthānaka.

Muhūrta = measurement of time, equivalent to 48 minutes
Antaramuhūrta = a period of time less than 48 minutes
Guṇasthāna = stage of spiritual development

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम तत्त्व का अभ्यास तो करते हैं, उसे रटते भी हैं। परन्तु तत्त्व का गहन चिन्तन-मनन करके उसका भावभासन करना चाहिये।

We do study the eternal truth and even memorise it. But we need to reflect upon it and try to gain its recognition.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपना अस्तित्व अनादि से है मगर अभी जो मनुष्य जन्म इत्यादि संयोग मिले हैं वे बार-बार मिलना सम्भव नहीं है। इसलिये उनका उचित उपयोग करना चाहिये।

We have existed since beginningless time. But it is not possible to repeatedly get the fortunate circumstances that we happen to enjoy currently, like human birth, etc. Hence, we must make the best use of this unique opportunity.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

भगवान ने हमें धर्म परीक्षा कर के ग्रहण करने को कहा है। जन्म से हमें जो धर्म मिला है या फिर जिस धर्म में भीड़ ज़्यादा हो उसे आँखें मींचकर ग्रहण करने को नहीं कहा है।

God has asked us to follow dharma after examining its tenets/principles. He has not asked us to blindly accept the religion one is born in or to follow the religion that has the largest following.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम नाम के लिये दान देते हैं तब उससे पुण्य के साथ पाप भी बाँधते हैं। पुण्य भी कमज़ोर ही बाँधते हैं।

When we do charity for the sake of fame and prestige, we bind pāpa along with puṇya. And the puṇya we earn is very weak.

Puṇya = merit, results in gain
Pāpa = sin/demerit, results in pain

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें सच्ची बातें अपने से छोटों से भी अवश्य सीखनी चाहिये। उस में हमें अपना अहंकार बीच में नहीं लाना चाहिये।

We should be willing to learn good things even from those who are younger than us. We should not let our ego hold us back from learning.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम बात-बात पर ग़ुस्सा करने लगते हैं तब हम समस्या का समाधान नहीं ढूँढ पाते बल्कि हम समस्या को ज़्यादा पेचीदा बना देते हैं।

When we start getting angry over insignificant things then we will not be able to solve the problem. On the contrary, we will only complicate the problem.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें अपने कार्यों के पीछे की अपनी नियत जाँचते रहना है। अगर हमारी नियत ख़राब है तो हमें समझना है कि अपनी नियति भी ख़राब है।

We must keep examining the motive behind our actions. If our motive is bad, we must understand that our fate will also be bad.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर हम अपने कर्त्तव्य में कामचोरी या बेईमानी करते हैं तो हमें सत्य धर्म मिलने की सम्भावना बहुत ही क्षीण है।

If we are lazy and dishonest in doing our duty, we are very unlikely to attain the Satya Dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादिकाल से हमने मोहवश अनन्त दु:ख भोगे हैं। अब यह सिलसिला कब तक चालू रखना है यह सोचना चाहिये।

From beginningless time, delusion has caused us endless sorrow. We need to reflect on how long we wish to suffer in this manner.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बच्चों के प्रति अपना पहला दायित्व उन्हें अच्छे संस्कार देना है जिससे वे अपना भविष्य अच्छा बना सकें।

Our first duty towards our children is to inculcate good values in them so that they build a good future for themselves.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपने साथ घटित हो रही हर घटना को सकारात्मक ढंग से लेकर हम आर्तध्यान (पाप) से बच सकते हैं।

By taking everything that happens to us positively, we can save ourselves from the sin of mournful reflection.

Ārta Dhyāna — mournful reflection

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो लोग अपने साथ घटित हो रही हर घटना को सकारात्मक रूप से नहीं लेते वे अपने वर्तमान और भविष्य दोनों ही बर्बाद कर लेते हैं।

Those who do not take everything that happens to them positively, destroy their present as well as their future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे वीतरागी होना है उसे सबसे पहले तीव्र राग-द्वेश को छोड़ना पड़ेगा।

One who wishes to attain vītarāga shall have to first give up intense attachment and aversion.

Vītarāga — supreme detachment, enlightened detachment

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोभ कषाय सब कषायों में शक्तिमान है क्योंकि वह आत्मज्ञानी को भी अशान्त कर सकता है।

Greed is the most powerful passion of all because it can disturb even the self-realised one.

Kaṣāya — passion

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादिकाल से अपने को देहरूप ही माना है। देह के नाम को ही अपना नाम माना है। इसलिये हम दु:खी हैं। अब सच्ची अनुभूति कब करनी है यह सोचना चाहिये।

Since beginningless time, we have considered ourselves to be the body and identified ourselves with its name. This is why we are unhappy. Now we have to reflect upon when we wish to experience the truth.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम सही या ग़लत जैसा भी वस्तुस्वरूप का निर्णय करते हैं,
वैसा ही भावभासन हमें होता है।

Our mental experience depends upon our understanding of a thing, irrespective of whether it is right or wrong.

Bhāvabhāsana — mental experience

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तत्त्व का सम्यक् निर्णय होगा तब पर्याय में सुधार अपने-आप आ जाता है। यही सहज योग है।

When the eternal truth is understood appropriately, one's condition starts improving on its own. This is Sahaja Yoga.

Sahaja Yoga — There exists a cause and effect relationship for everything. When one gives the right cause, the right effect follows automatically. One need not worry about it. So, providing the right cause and not worrying about the result is known as Sahaja Yoga.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पाँच समवायों में एकमात्र पुरूषार्थ ही अपने हाथ में है। अगर हम निमित्त या नियति या काल की राह देखकर वर्तमान गँवायेंगे तो आत्मज्ञान प्राप्त होना मुश्किल है।

Of the five samavāyas, only puruṣārtha is in our hands. If we lose the opportunity to act now and wait for nimitta or niyati or kāla to intervene, attaining self-realisation will be difficult indeed.

Samavāya — set of 5 inherent causes that help an action achieve completion. Nothing can take place unless all 5 samavāyas come together and function simultaneously
There are 5 samavāyas:
Kāla - time
Svabhāva - true nature of a substance
Niyati - fate
Puruṣārtha - correct efforts
Nimitta — incidental cause, catalyst. It includes karma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादिकाल से हमने अपने को आत्मा नहीं मानकर ही अनन्त दु:ख झेले हैं। अगर आगे भी हमने अपने को आत्मा नहीं माना तो अपना हित-अहित न समझने से अनन्त दु:ख ही पायेंगे।

Since beginningless time, we have suffered endless sorrow by not identifying ourselves with the soul. If we continue in the same vein without understanding what is beneficial to us as a soul, there shall be no end to our suffering.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो लोग दृष्टि (सम्यग्दर्शन) के विषयरूप पर्यायरहित द्रव्य को पाना चाहते हैं वे पहले ही पर्याय को याद करके अपना रास्ता रोक लेते हैं।

Those who seek dravya free from paryāya (manifestation) as the subject of samyagdarśana, block their own progress by remembering paryāya first.

Dravya — substance
Guṇa — the permanent inalienable attributes of a substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance, the present form of a substance
Samyagdarśana — enlightened perception, true insight

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

तत्त्व के ग़लत निर्णय के रहते आत्मज्ञान कभी नहीं हो सकता। इसलिये सभी को तत्त्व के सम्यक् निर्णय के लिये ही प्रयास करना चाहिये।

As long as the eternal truth is not understood correctly, self-realisation cannot be attained. Hence, everyone should only make efforts to achieve a correct understanding of the eternal truth.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे सुखी होना है उसकी दृष्टि अपने आत्मस्वभाव पर होनी ज़रूरी है। अन्यथा जैसे हम अनादि से भटक रहे हैं और दु:ख झेल रहे हैं उस परिस्थिति को रोका नहीं जा सकता।

One who wants true happiness must focus on the true nature of the soul. Else, our condition of endless wandering and suffering since beginningless time cannot be alleviated.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मज्ञान चिन्ता करने से नहीं मिलने वाला। वह तो आत्मचिन्तन करने से अपने-आप मिलने वाला है। यही सहज योग है।

Self-realisation cannot be attained by worrying about it. It is attained without any effort by those who reflect on the true self. This is Sahaja Yoga.

Sahaja Yoga — There exists a cause and effect relationship for everything. When one gives the right cause, the right effect follows automatically. One need not worry about it. So, providing the right cause and not worrying about the result is known as Sahaja Yoga.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम आत्मचिन्तन करते हैं तब हम अपने-आप ही आत्मज्ञान के नज़दीक जाते हैं। जो लोग आत्मज्ञान न मिलने से चिन्तित रहते हैं उन्हें आर्तध्यान (पाप) होता है। आगे चलकर वे लोग हताश-निराश होकर आत्मज्ञान के लिये अपने सारे प्रयत्न ही छोड़ देते हैं।

When we reflect on the self, we automatically come close to self-realisation. Those who constantly worry about not having attained self-realisation are committing the sin of mournful reflection. Going forward, they get disheartened and frustrated and give up all efforts to attain self-realisation.

Ārta Dhyāna — mournful reflection

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब आत्मचिन्तन उत्साह के साथ किया जाये तब आत्मज्ञान की प्राप्ति निश्चित है। इसके लिये "मुझे क्या पसन्द है?" यह जाँचते रहना चाहिये।

Self-realisation is certain when one reflects on the soul with enthusiasm and sincerity. For this, one must constantly keep checking one's likes and dislikes.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पहले हमें भोग का आकर्षण होता है, फिर हम उसे प्राप्त करने के लिये प्रयास करते हैं। प्रयास करने पर सभी को भोग प्राप्त होंगे यह तय नहीं, लेकिन उन भोगों के प्रति आकर्षण से हमें पाप का बन्ध अवश्य होता है। इसलिये पहले हमें भोगों के प्रति आकर्षण को ख़त्म करने का पुरुषार्थ करना चाहिये।

At first, we are attracted to sensual pleasure. Then we make efforts to experience sensual pleasure. It is not certain whether we will experience the sensual pleasures we seek, despite making efforts to do so. But desire for sensual pleasures certainly results in the inflow and bondage of pāpa karmas with the soul. Hence, we must first and foremost make correct efforts to overcome our attraction towards sensual pleasure.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें अपना कर्तव्य निभाते समय अहंकार से बचना है। अगर हमें उस वक़्त अहंकार होता है तो हमें पाप का अधिक बन्ध होता है।

Fulfilling one's duty should not result in arrogance. If we feel arrogant because we are fulfilling our duty, it will result in increased inflow and bondage of pāpa karmas with the soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

यदि हम पुण्योदय से मिले अच्छे संयोगों को अपने कर्तृत्वपन से जोड़कर अहंकार करते हैं, तो हमें पाप का अधिक बन्ध होता है। भविष्य में उस पाप के उदय में हम दःखी हो सकते हैं। अहंकार से अपना वर्तमान भी बिगड़ता है क्योंकि उससे अपने पुराने पाप कर्म भी अधिक दुःखदायी बन जाते हैं।

If we credit ourselves for achieving our current fortunate circumstances which are in reality the fruits of puṇya, and feel proud of ourselves, it will result in increased inflow and bondage of pāpa karmas with the soul. In the future, when those pāpa karmas come into fruition, they may cause us sorrow. Arrogance also harms our present because it makes older pāpa karmas more painful.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तक हम अपने आपको आत्मा नहीं मानते तब तक हम अपने यानी आत्मा के हित का विचार कैसे कर सकते हैं? नहीं कर सकते क्योंकि तब तक हमें अपने स्वहित का पता भी नहीं होता।

Unless we consider ourselves to be the soul, how could we contemplate on what is beneficial to the self (soul)? We cannot because we do not know what is beneficial to us as souls.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें दु:खी, रोगी, पापी, चोर इत्यादि के प्रति एकमात्र करुणा भाव ही रखना चाहिये। अन्यथा हमें पाप का अधिक बन्ध होता है। उनके प्रति रोष या द्वेष करने से हमारा वर्तमान भी बिगड़ता है।

We must feel only compassion towards the sad, the ill, the sinner, and the thief. Else, it will result in increased inflow and bondage of pāpa karmas with the soul. Hatred or anger towards them will also harm our present.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे अपनी आत्मा का हित पता है वह इस लोक में शान्त-सुखी-सहनशील है और उसका भविष्य भी उज्ज्वल है।

One who knows what is beneficial to his soul is calm, happy and tolerant in this world and his future is bright.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

मैत्री भावना – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

– मुखपृष्ठ की समझ –

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।